

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये अष्टाशीतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে অষ্টাশীতিতমং দশকম্ ॥

সন্তানগোপালোপাখ্যানম্

প্রাগেরাচার্যপুত্রাহতিনিশমনযা স্ত্রীযষটসুনুরীক্ষাং

কাঙ্ক্ষন্ত্যা মাতুরুক্ত্যা সুতলভুরি বলিং প্রাপ্য তেনার্চিতস্তুম্।

ধাতুঃ শাপাদ্বিরণ্যান্নিতকশিপু ভরান্ শৌরিজান্ কংসভগ্না -

নানীযৈনান্ প্রদর্শ্য স্বপদমনযথাঃ পূর্নপুত্রান্ মরীচেঃ ॥ ৪৪.১ ॥

শ্রুতদের ইতি শ্রুতং দ্বিজেন্দ্রং

বহলাশ্রং নৃপতিং চ ভক্তিপূর্ণম্।

যুগপত্ত্বমনুগ্রহীতুকামো

মিথিলাং প্রাপিথ তাপসৈঃ সমেতঃ ॥ ৪৪.২ ॥

গচ্ছন্ দ্বিমূর্তিরুভযোযুগপন্নিকেত -

মেকেন ভুরিরিভরৈরিহিতোপচারঃ।

অন্যেন তদ্দিনভূতৈশ্চ ফলৌদনাদ্যৈ -

স্তূল্যং প্রসেদিথ দদাথ চ মুক্তিমাভ্যাম্ ॥ ৪৪.৩ ॥

ভূযোহথ দ্বাররত্যাং দ্বিজতনযমৃতিং তৎপ্রলাপানপি ৎরং

কো রা দৈরং নিরুক্ষ্যাদিতি কিল কথযন্ রিশ্ররোচাপ্যসোচাঃ।

জিষ্ণোগর্গরং রিনেতুং ৎরযি মনুজধিয়া কুণ্ঠিতাং চাস্য বুদ্ধিং

তত্ত্বারুচাং রিধাতুং পরমতমপদপ্রেক্ষণেনেতি মন্যে ॥ ৪৪.৪ ॥

নষ্টা অষ্টাস্য পুত্রাঃ পুনরপি তর তূপেক্ষয়া কষ্টরাদঃ

স্পষ্টো জাতো জনানামথ তদরসরে দ্বারকামাপ পার্থঃ।

मैत्र्या तत्रोषितोऽसौ नरमसूतमृतौ रिप्रर्यप्ररोदं
श्रृंरा चक्रे प्रतिञ्जामनुपहतसूतः सन्निरेक्ष्य कृशानुम् ॥ 88.5 ॥

मानी स एरामपृष्टरा द्विजनिलयगतो
बाणजालैर्महास्त्रैः
रुक्मानः सूतिगेहं पुनरपि सहसा
दृष्टनष्टे कुमारे।
याम्यामैन्द्रीं तथाहन्याः सुरररनगरी -
रिदय्याहसद्य सद्यो
मोघोद्योगः पतिष्यन् हृतभुजि भरता
सस्मितं वारितोऽहभुं ॥ 88.6 ॥

सार्धं तेन प्रतीचीं दिशमतिजरिना
स्यन्दनेनाभियातो
लोकालोकं र्यतीतस्तिमिरभरमथो
चक्रधाम्ना निरुक्कन्।
चक्रांशुक्लिष्टदृष्टिं स्थितमथ रिजयं
पश्य पश्यति वारां
पारे एरं प्राददर्शः किमपि हि तमसां
दूरदूरं पदं ते ॥ 88.7 ॥

तत्रासीनं भुजङ्गाधिपशयनतले
दिर्यभूषायुधैः -
रारीतं पीतचेलं प्रतिनरजलद -
श्यामलं श्रीमदङ्गम्।
मूर्तीनामीशितारं परमिह तिसृणा -
मेकमर्थं श्रुतीनां

एरामेर एरं परात्नन् प्रियसखसहितो
नेमिथ क्षेमरूपम् ॥ 88.8 ॥

युरां मामेर द्वारधिकरिर्बृताञ्जिततया
रिभिनौ सन्द्रष्टुं स्वयमहमहार्षं द्विजसुतान्।
नयेतं द्रागेतानिति खलु रितीर्णान् पुनरमून्
द्विजायादायादाः प्रणुतमहिमा पाण्डुजनुषा ॥ 88.9 ॥

एरं नानारिहारैर्जगदभिरमयन् रूष्णिरंशं प्रपुष्ण -
नीजानो यञ्जभेदैरतुलरिहतिभिः प्रीणयन्नेनेत्राः।
डुभारक्षेपदञ्चां पदकमलजुषां मोक्षणायारतीर्णः
पूर्णं ब्रह्मैर साक्षाद्यदुषु मनुजतारुषितस्तुं र्यासीः ॥ 88.10 ॥

प्रायेण द्वाररत्यामरूतदधि तदा
नारदस्तुद्रसार्द्र -
स्तस्माल्लेभे कदाचिंखलु सुकृतनिधि -
स्त्रुपिता तद्बुबोधम्।
भञ्जानामग्रयायी स च खलु मतिमा -
नुद्धरस्तुत एर
प्राप्तो रिञ्जानसारं स किल जनहिता -
याधुनाहंस्ते वदर्याम् ॥ 88.11 ॥

सोहयं कृष्णरतारो जयति तर रिभो
यत्र सौहार्दभीति -
स्नेहद्वेषानुरागप्रभृतिभिरतुलै -
रश्रमैर्योगभेदैः।
आर्तिं तीर्त्वा समस्ताममृतपदमण्ड -
स्सरतः सरल्लोकाः

स एरं रिश्रार्तिशान्ते परनपुरपते
भक्तिपूर्ते च डूयाः ॥ 88.12 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टाशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥